

ASHA ARCHIVES 3493

729 11/12/21



रुलेयक मिहमूलसमस्तकी। रोकयामिचनेवर्धं शाकं मद्य  
दियत्कली॥ ॥ नैवर्धं ॥ शाकं शाकं तथाययं लदं वा घीवधि  
दिली। लवणकदकं तिकं दुवर्धं मधुर्वतथा॥ गृहाण वीनवी  
नं निःकलीसंयाकयं मम ॥ ॥ गृहाण ॥ यदुसस्य इमं यकं  
विदवदवतायसी। सोराग्रदवर्धं यीतिः तामूलं तं यदुसस्य  
॥ ॥ यकान्न ॥ यकान्नं विविधं सर्वं मादकादि समन्विता

रुलजिह्वाकादीनि गृह्यतां यत्र मधुवि॥ ॥ आवाहनीया  
वाहयामिदं विल्वं यथैकं कामनाकृतं मगलं यनिर्मयकं न  
मामियत्र मधुवी॥ ॥ स्त्रयनी ॥ स्त्रययामियत्र मगलं मरुम  
गुलकगुरु मन्निधानं कवामित्वा कववी कवणानिव ॥ स्त्र  
नं कवामिविधिना यथायाशाद्यमवव ॥ आवमनीयं गृहानं  
दी तथेवाद्यविधानकं ॥ दणविधानं पूजायं संस्तु नं मयः



रोक्षता ॥ नृतिदणविधानयुजा ॥ ॥ दायदाल ॥ यांहासल  
 नति ॥ सुप्रतिष्ठावृनदा रुवन्तु ॥ ॥ आसनमन्त्रक्यासवायान  
 थनवाया ॥ मन्त्रकैलागदंयसा ॥ लांकुर्नवतथासनी ॥ डयवीत  
 मिदंवीन ॥ गृह्णतां वसुसिद्धय ॥ ॥ दवददिगाया ॥ नूना  
 धिकमिदं कर्मा ॥ यदिद्विदमद्विदका ॥ कनूसयूधुतां सर्वं ददि  
 गां वयरोक्षतां ॥ ॥

[illegible]



ॐ नमो महादेवे वाय ॥ तस्मै नमः सधर्मि माखलसदं यु  
धियूजविधिर्विद्युत ॥ द्रव्याकर्मकादवयूजा ॥ यजमान  
वतनतवकस्नाननकुवक ॥ आचमनयावक ॥ कस्ना  
नलखजानकीत ॥ ॐ अथ ह्यादि ॥ यजमानस्य पुतिवा  
विकपीमकुपी वू दवतावतनिमित्तार्थं कर्तुं पीसू

यार्थार्थं नमः ॥ ॐ माहान्धकालसि ॥ यथागर्जनं ॥ ॐ सिद्धि  
नमुकियालमृति ॥ ॥ दवस्नानयावक यजमाननी ॥ एषाक  
यउयं ॥ जलस्नानं ॥ ॐ गङ्गायासलिलसि ॥ थार्थं सकलतायां  
इदध्विः यनः कष्टिः साखल ॥ पूनः जलस्नान ॥ वतसि  
नूनः दष्टिः यजमकाः अकतः स्नानः अद्वानः वरुमर



न॥ यद्वासनवाय॥ तायदाल॥ नैव शराजनजाल  
य॥ नैवलवाय॥ यत्तयजमाननै॥ ॥ वाक्कणन॥ आ  
वसन३॥ युगयाम॥ न्यास४॥ अर्घ्यानुयूजामाहाउ  
यार्म॥ आत्मयूजा॥ आसन॥ याद्यादि॥ शुभैलि३॥ अ  
प्रमनु७॥ ॥ वंदावन॥ उं सयाजाता॥ उं स्वरि

न॥ नृजा॥ धूयदीयरुलनैव शत॥ वदनै॥ युतिष्ठा॥ ॥  
जय४॥ सार्ज॥ उं नम४गिवाय॥ मन्त्रायति॥ अगुगन्धदि  
॥ समयकायमाल॥ मालकाकाय॥ ॥ नितिसकादवयूजा॥ ॥  
श्रीकृष्णाय नम४॥



रत्नसाधनपुष्टिद्वययुजा ॥ यजमानेनावसा ॥ कस्मान्तर्लख  
जानकैत ॥ ॐ अथ यथादि ॥ यजमानस्य पुतिवार्षिकप्रोम  
क्षीप्रो ॐ हृदयतावृत्तनिमित्तार्थं कर्तुं प्रीत्यर्थं याद्यैत  
मः ॥ यथातमः ॥ ॐ भार्गवकालति ॥ यथा राजनयावक  
॥ ॥ क्रियायावावावावतयार्थं जलस्नान ॥ इह धलि

धल ॥ कष्टि ॥ साखल ॥ यूनः ॥ जलस्नान ॥ दवयास्नानलख  
नथमआदिनसकलं हाय ॥ अलिस्नान ॥ वतसिन्दूर ॥ ॥ ह  
ष्टि ॥ यजम ॥ अकृत ॥ स्नान ॥ कर्तुं यथाका ॥ यथायथाका ॥ अ  
रुवात्र ॥ वदमट ॥ ॥ यद्वामनथाय ॥ तायदालं ॥ ममात  
नेव यराजनजालय ॥ नवलवाय ॥ धन ॥ ॥ कथयुय



यजमानतर्तयकं ॥ ॥ वाङ्मन आचमन ३ ॥ ॐ अथ  
लादि ॥ सूर्यार्घ्यं ॥ पुनूनमस्कारं ॥ न्यासः ॥ जलाघ्यादयू  
जा ॥ आत्मयूजा ॥ ॥ मारुनीरुय ॥ वहुर्मस्कारसुल  
वयादाव ॥ वकननव्याव ॥ वतनवाय ॥ तुंकीसो ४  
मारुनीरुय ॥ युजायाय वहुर्मनः ॥ ॥ मालनीय

१०७ ॥ धूनिवालिसलाय ॥ ॥ यधरवलिसमयक्यक  
॥ तर्पण ॥ ॥ श्रीसर्वकृतिआवाहनं ॥ ॥ विदवा  
दिथवमालकायूजा ॥ ॥ यतमूलयाविषासयूजा ॥  
न्यासः ॥ सांअनुवास्यांनमः ॥ ॐ लादिसदीर्घन ॥ आ  
सनयूजा ॥ आधनादि ॥ तुंसीहासनयायू ॥ ॥ नमः ॥



आवाहनादिमूढा ॥ ॥ मूलं दग्धं दधौ या घृतमसः ॥  
धार्थी ॥ अर्घ्यं आचमनीयं स्नानं चन्दनं सिन्दूरं अ  
क्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं पुनराचमनीयं तय ॥  
शुक्लं ॥ ॐ दूर्गा देव्यै नमः ॥ स्वाहा श्रीदूर्गा देव्यै  
श्रीवाङ्मयै नमः ॥ ३ ॥ वलि ॥ वरुणाय नमः ॥

॥ याति मूढा ॥ मूलं सर्वेष्वपि पूजा ॥ आसना ॥ शुक्लं ३ ॥  
वरुणाय नमः ॥ वलि ॥ गिरि मूढा ॥ धर्म मूलं ॥ ॥ तत्तावु  
द्गच्छति गच्छति पूजा ॥ न्यासः ॥ आध्यावादि ॥ ॐ ह्रीं सासन  
यायू ॥ शुक्लं ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विमलं अ  
प्रीतुं कर्तव्यं विद्वद्वायू ॥ ३ ॥ वरुणाय नमः ॥ वलि ॥ यद्यमः



डा॥ ॥थ॥थी॥वृषासन॥कं॥शिगूलमूडा॥माकं  
नीया॥ ॥मयूनासन॥वं॥गकिमूडा॥कोमानीया॥ ॥  
गवूजासन॥ट॥गंखमूडा॥वेवूनीया॥ ॥महिषास  
न॥तं॥कोलमूडा॥वानादीया॥ ॥गजासन॥यं॥  
कुरमूडा॥ॐन्दाणीया॥ ॥यंसासन॥यं॥कथमू

डा॥वामपुया॥ ॥सिंहासन॥गं॥संहासनमूडा॥म  
हालश्रीया॥मलुड(थं)आखनकु(ग)उरककुलकं॥  
ॐतिमानुकागणयूजा॥ ॥ततागणयूजनं॥न्या  
स॥आधनादि॥मूषासनयायू॥आन॥आवाहन  
दि॥शुअलि॥जंगमी॥गुं॥प्रीगणयतयं॥वचना



929

3493

ASHA ARCHIVES



१२७ थामि सारवेलस देसु जिपूनाविधि

३४९३  
ASHA ARCHIVES



दवीसहिताययायू॥३॥ वलि४॥ गजसूडा॥  
मताक्षययालयायू॥ न्यास४॥ आक्षत्रादिर॥ त्रिषुतासु  
नयायू॥ क्षान्त४॥ आवाहनादि॥ शुभलि४॥ त्रिजन्म  
कीदूक्षुक्षयालयायू॥ वलि४॥ वलि४॥ दण्ड  
सूडा॥ वृ॥ ॥ चानयूजा॥ त्रिसिंदुमुखीयायू॥ त्रिवा

पुमुखीयायू॥३॥ वलि४॥ ॥ मालकायूजायाद  
निर्वाणत्वयूजायाय॥ ॥ सगुणयूजात॥ आक्ष  
त्रादिर॥ शुभलि४॥ त्रिजन्मलेखयूजायाय  
वृचिबकीविरु४यायू॥३॥ वलि४॥ ॥ वलि  
मालं३॥ वलि४॥ मालकाविरु४यायू॥ वि४॥ वलि४॥ त्रि







ना॥ हूं अवगुणुर्न॥ धनसूदा॥ वरुद्धनागधन॥ वंरसि  
नृनखानत॥ वरुद्धनयूजा॥ यणुमनुकते॥ उं यणुयाग  
यविद्युद् विष्णुकर्मणधीमहि॥ तन्नाजीव४युवाद्  
या॥ सैकल्य॥ उं अशुल्यादि॥ यजमानस्ययुतिवार्धि  
कपीमकुपी ऋद्धदवतायूजाकर्मणिदुर्गादशुनू

संद्वागयणुवद्विदेवर्तद्याटयिधु॥ नाउत॥ पूर्वज  
नकृगात्यायात्यणुजन्मनिजायत॥ सर्वयायविनिर्म  
क४ स्वर्गलार्कसगद्धति॥ मूहायक॥ श्याय॥ मृगुद्ध  
य॥ सतविय॥ ॥ यजमानयातमपुलयादाव॥ म  
हामाया॥ श्रीसर्वरु॥ दमासुति॥ अशुगन्धदि॥ ॥



यजमानतमगुलयास्नानकायमगुलसनक ॥ ॥ द  
वदक्षिण ॥ वाक्कणयूजादक्षिण ॥ ॥ सकलसननंद  
वजायकदववाक्कणदक्षिणतयक ॥ ॥ धनमिमा  
मास्तु वासिधुतयदवयाकनिष्ठाया ॥ ॥ वाक्कयूजा  
द्वया ॥ वाकनद्वया ॥ नालकाद्वया ॥ ॥ मरविद्यक

सगुणमादनीद्वया ॥ ॥ यजमानाहिसक वन्दनादि  
स्नानविद्य ॥ समयथवक्तुआगततस्थिसकलसर्वविद्य ॥ ॥  
न्यासलिकाय ॥ वलिआय ॥ आचमन ॥ सूर्यसाद्वि ॥  
मगुलिकाय ॥ वृत्तिधसिमायलसदगुणियूजाविधि ॥  
सं० १ वे० १ श्रीनीलकण्ठनन्दनलिखित ॥ गुरु ॥



जलानमस्तुशागम्यामलिलेषु नान्नायाययुतागनीयुतक  
त्याययुकातां स्नानार्थं तसुरोद्वर्ता ॥ दीनस्नानं ॥ उभयभूमि  
यथाहमोदिवृत्तविद्वहमिक ॥ यथाधामत्यविरुक्त दीनस्ना  
नंयुरोद्वर्ता ॥ ॥ दधिस्नानं ॥ गमायतायादधिधूयुं ममाय  
तियत्रग्वर्त ॥ तद्वध्वास्नाययामित्वा सर्वयायद्वयार्थक ॥  
युतस्नानं ॥ कथिल्लायायुतीषु मराववयद्रुवं ॥ रास्कर

दवतायुयुं स्नानार्थं रोकयामित ॥ ॥ मधुस्नानं ॥ मधुमदिक  
संरुतं दवधिरुयुमादकी ॥ यायोद्यनागनार्थं त्वां मधुनास्नाय  
यामादकी ॥ ॥ गन्धस्नानं ॥ नानंदनसंरुतं गन्धनागुन  
स्वादकी ॥ कामायरागुयुयुयुर्थं तस्नानं रोकयामित ॥ ॥ लीख  
स्नानं ॥ ॥ मनुस्नानं ॥ मन्नागकिं निवामांसं तस्मिन्मित्रितमू  
रुमं मृद्विमिद्विषुदयुयुं मलिस्नानं दयामादकी ॥ ॥ वन्दनी ॥



ॐ दं मलयसंरुतं चन्दनं हिमणीतली वीरजा कुरु विद्वतं ॥ मृदा  
गममसिद्धय ॥ ॥ **सिन्दूरं** ॥ यषु वद्वत कुरुसा ॥ लां कृतं वीररु  
षर्गं ॥ गृहाण वीरवीरणी ॥ **सिन्दूरं** वर्गदायकं ॥ ॥ **दृष्टि** ॥ स ॥ ग  
मर्त्यवयातालं ॥ चतुर्दशसूक्तमिक ॥ दिव्यवद्वत रुलयदं ॥ दृष्टि  
शोकयामित ॥ ॥ **यजमा** ॥ उयवीरमिदं सूर्य ॥ मन्त्रकुरुसा ॥ वीरुतं  
गृहाण वीरयागसा ॥ रुलयार्कवयत्तम ॥ ॥ **श्रु** इवावत ॥ ॥

ॐ ४ आसनमनुधत्

नसाकया ॥ कसूर्यगुनकदात्र ॥ सिद्धकन्दनकादिकी ॥ डाजायूनात्म  
कंगर्भ ॥ गृहाण वीरनायिक ॥ ॥ **स्नान** ॥ मालीनानाविधं विग  
वर्णुसोत्ररुतिर्हर्न ॥ तुलायूनात्मकीवीर ॥ गृहात न्द्रुलायय  
॥ ॐ ॥ **कर्णुयताका** ॥ कर्णुर्थयगर्तवेव ॥ यताकावर्णुसैयूती  
दिव्य ॥ गृहाण यय ॥ तद्गृहाण यय ॥ ॥ **यय** यताका  
॥ **यय** वर्णुयताका ॥ यय ॥ तद्गृहाण यय ॥ यय ॥ तद्गृहाण यय ॥



रोकयासियनं वि॥ ० ॥ वदुमट ॥ कद्रुषिकाइदं युजं  
 चित्तामणिसमूहमं । मनामन्यादिदं वीहिः । मां वृत्तं तत्पु  
 गृह्णतां ॥ ॥ यद्वामनवाय ॥ तूलनकलिसित्या कः क  
 गनमत्रणीरुवः । वक्रुनिर्द्वयत्थानं । द्विन्नं नाजरुयानि  
 च ॥ असादृशु कृतं यजुः । मनुसिद्धिर्न जायता । यवसंमितामा  
 नं न । तनुनायीतवासक ॥ सर्वसिद्धि कर्तव्या कः । सर्वयाय कृत्यं

यदी । सर्वदाय कृत्यं गतिः । यीतवासं गृहाणमं ॥ ॥ तायकाल  
 ॥ लाजाय कृत्यं नमः । नासुयाकिरुल्युदी । गृहाणदं हि भवि  
 तं । गुरुकान्तिवयुः ॥ ॥ धूयया ॥ सायाशं सरुजं वेव धूय  
 यं न गलां कृत्यं । गृहाणवीनवीनगि । यथा कुरुलसिद्धयं ॥ ॥  
 दीयया ॥ सुयुका । गामरुदीयः । सर्वकृतिमिवाय रुहा । सवाक  
 ल्यकृत्यं । दद्यायं युतिगृह्णतां ॥ ॥ रुली ॥ आमुनाना



ASHA ARCHIVES 3493

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय